कथिड्रल एण्ड जॉन कॉनन स्कूल

कक्षा- दसवीं | प्रीलिमनरी परीक्षा -2007 - 08 | अंक – 80

दिनांक – 10-01-08 | विषय – हिन्दी | समय- 3 घंटे+10 मि.

Theexampapers.com

सूचना – इस प्रश्न पत्र के दो विभाग हैं । विभाग 'अ' और विभाग 'ब' । विभाग 'अ' के सभी प्रश्न करना अनिवार्य है । विभाग 'ब' से किन्हीं दो पुस्तकों को चुनिए। चुनी गयी पुस्तकों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक पुस्तक से एक प्रश्न करना अनिवार्य है । विभाग 'अ' और विभाग 'ब' के प्रश्नोत्तर अलग-अलग उत्तर पुस्तिका में लिखिए ।

विभाग अ (अंक-40)

प्रश्न-1 निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 300 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए । (15)

1) महिलाओं का नौकरी करना बच्चों के हित में है या अहित में – किसी एक पक्ष पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।
2) पर्यावरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके दूषित होने के कारण तथा निवारण (दूर करने) पर प्रकाश डालिए ।
3) क्रिकेट की लोकप्रियता को दर्शाते हुए क्रिकेट के खेल में आये नवीनतम बदलाव पर प्रकाश डालिए
4) एक कहानी लिखिए , जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो :-

   'बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय'

5) नीचे दिए गए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए । चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए , अथवा कहानी लिखिए , जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए ।

प्रश्न-2 निम्न लिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए । (7)

अपने विद्यालय में मनाए गए आनंद मेले (School fete) का वर्णन करते हुए अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिए ।

अथवा

दूरदर्शन पर अपराधिक कार्यक्रम दिखाए जाने से बच्चों पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का वर्णन करते हुए इस पर प्रतिबंध लगाने हेतु सूचना एवं प्रसारण मंत्री भारत सरकार को एक पत्र लिखिए ।

प्रश्न -3 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए । उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए।

संसार में सबसे अधिक जो चीज दी जाती है वह है सीख , और सबसे अधिक न ली जाने वाली चीज भी सीख ही है। सीखों का अम्बार लगा है , जो चाहे जितना उठा ले , किन्तु विडम्बना यह है कि सुन्दर सीखों का सब सम्मान करते हैं , पर उस पर आचरण करने का अवसर आता है तो दूर से नमस्कार करते हैं ।

तब सहज प्रश्न उठता है कि इन सीखों की अमृत वर्षा का क्या महत्व है ? स्वाति नक्षत्र में जब पानी बरसता है , तब कहते हैं , सीप में मोती बन जाता है , केले में कर्पूर बन जाता है और सर्प के मुँह में विष । इनमें कुछ बनता तो है , किन्तु अधिकांश जल तो माटी को गीला करके ही रह जाता है। सम्भव है, यह जल कृषि के लिए उपयोगी होता हो , परन्तु यहाँ देखने की बात यह है कि महत्व जल का है अथवा उसे ग्रहण करने वाले पात्र का ?

एक बार अपने एक मित्र के साथ जमुना के किनारे घूम रहा था। मैंने वहाँ एक महात्मा को बैठे देखा । उनके निकट पहुँचकर मैंने विनम्रता से कहा ,"हम विद्यार्थी हैं , कुछ सीख दीजिए ।" थोड़ी देर बाद साधु ने कहा ,"मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ कि आज से किसी से उपदेश न माँगना ।" इतना कहकर उन्होंने गरदन झुका ली । इस अनोखे उपदेश को सुनकर हम चकित रह गये – एक दूसरे को देखने लगे । इच्छा हुई कि उठकर चल दें , पर सोचा , इस उपदेश का मर्म तो समझ लें ।

हिम्मत करके मैंने निवेदन किया ,"महाराज , मैं कुछ समझा नहीं । आपने तो कोई उपदेश नहीं दिया , किसी अन्य से भी उपदेश प्राप्त करने का मार्ग बन्द कर दिया ।"

साधु महाराज ने अपना सिर उठाया और पूछने लगे ,"क्या नहीं समझे ? क्या तुम नहीं जानते कि सत्य बोलना अच्छा है , चोरी करना बुरा है ? क्या तुम नहीं जानते कि दूसरों की सेवा करना अच्छा है, दूसरों की बुराई करना बुरा है ? क्या तुम नहीं जानते कि समय का सदुपयोग करना अच्छा है , आलस्य में समय बिताना बुरा है ?" जानता हूँ , मैंने धीरे से उत्तर दिया ।"तब फिर क्या उपदेश चाहते हो ? जाओ जो जानते हो , उसे जिओ ।" इतना कहकर साधु महाराज उठे और एक ओर चल दिए । हम लोगों ने भी रास्ता लिया ।

तब प्रश्न उठता है कि क्या सीख और उपदेश प्राप्त करने का प्रयत्न न किया जाए , साधु-संतों का सत्संग न किया जाए , सत्साहित्य का अध्ययन न किया जाए ? उत्तर है अवश्य किया जाए , किन्तु एक शर्त के साथ । भोजन उतना ही करें जितना पचा लें ।

पौष्टिक भोजन को गले के नीचे उतारते जाने से ही आदमी पुष्ट नहीं बन सकता । इस प्रसंग में आचार्य

विनोबा का एक कथन याद आ रहा है । विनोबाजी ने कहा था , "प्राणियों में अपने को श्रेष्ठ समझने वाले मानवों को पशुओं से भी कुछ सीखना चाहिए । भूख लगने पर पशु चारा खा लेता है । उतना ही खाता है , जितने की उसे आवश्यकता है । पेट भर गया , चारा छोड़ दिया । फिर वह एकान्त में बैठकर एकाग्रमन होकर जुगाली करता है । खाये हुए चारे को एक तरह से दुबारा खाता है । इसे ही 'जुगाली करना' कहते हैं । हम मानव के क्षेत्र में चर तो बहुत लेते हैं , कितनी सीखें सुन लेते हैं, कितने उपदेश ग्रहण कर लेते हैं , संतों और विद्वानों से ज्ञान की बातें सुनकर प्रसन्न हो लेते हैं , परन्तु बाद की जुगाली करते ही नहीं । प्रत्येक मनुष्य को जुगाली अर्थात् मनन करना चाहिए । मनन और विचार मन्थन से ही प्राप्त की हुई सीख , प्राप्त किया हुआ उपदेश , फलदायी होगा , नहीं तो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देने से कोई लाभ न होगा ।"

(1) सीख के साथ क्या विडम्बना है ? (2)

(2) स्वाति नक्षत्र के जल की क्या विशेषता होती है ? (2)

(3) साधु ने कौन-कौन से प्रश्न पूछे , जिसे युवक जानता था ? (2)

(4) मनुष्यों को पशुओं से क्या सीखना चाहिए ? संक्षेप में लिखिए। (2)

(5) किन्हीं चार शब्दों के अर्थ लिखिए ? (2)

एकाग्रमन , निवेदन , प्रयत्न , अम्बार , अवसर , अधिकांश

प्रश्न 4 – निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए ।

(क) **निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए ।** (1)

(1) जय (2) लाभ (3) आतुर

(ख) **निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।** (1)

(1) अमृत (2) अहंकार (3) मार्ग

(ग) **निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विशेषण बनाइए –** (1)

(1) श्रद्धा (2) मर्म (3) विष

(घ) **निम्नलिखित शब्दो में से किन्हीं दो शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए ।** (1)

(1) थकना (2) आदमी (3) गीला

(च) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(1) घोड़े बेचकर सोना (2) एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देना । (1)

(छ) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार , वाक्यों में परिवर्तन कीजिए ।

(1) मैं कुछ समझा नहीं । (1)

(मेरी ---------- से वाक्य शुरु कीजिए ।)

(2) पेट भर गया , चारा छोड़ दिया ।

(जब और तो का प्रयोग करके भविष्य काल में वाक्य लिखिए ।) (1)

(3) समय का सदुपयोग करना अच्छा है ।

(नहीं का प्रयोग कीजिए लेकिन वाक्य का अर्थ न बदले ।) (1)

काव्य चंद्रिका

प्रश्न -1 **निर्भय स्वागत करो मृत्यु का , मृत्यु एक विश्राम – स्थल ।**
जीव जहाँ से फिर चलता है , धारण कर नव जीवन – संबल ।
मृत्यु एक सरिता है , जिसमें , श्रम से कातर जीव नहाकर ।
फिर नूतन धारण करता है , काया – रूपी वस्त्र बहाकर ।
कविता – स्वदेश प्रेम , कवि – रामनरेश त्रिपाठी

(क) हमें मृत्यु का स्वागत किस प्रकार करना चाहिए और क्यों ? -3
(ख) मृत्यु और सरिता में क्या समानता है ? स्पष्ट कीजिए । -3
(ग) हमें अपनी आखिरी साँस और आखिरी खून की बूँद तक क्या करना चाहिए ? -2
(घ) अर्थ लिखिए - निर्भय , संबल , कातर , काया । -2

प्रश्न -2 अधिकार लो सदा न भीख माँगते रहो संग्राम से जनम-जनम न भागते रहो ।
छाई घटा चली हिलोर जागते रहो घर में कहीं घुसे न चोर जागते रहो ।
अपने महान देश के कुशल बचाव की तुम योजना करो सशस्त्र योजना करो ।
कविता – नवीन कल्पना करो , कवि- गोपालसिंह नेपाली

(क)हमें अपने देश की सुरक्षाऔरचोरों से सावधान रहने के लिए क्या करना होगा? -3
(ख) कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ? -3
(ग) यहाँ किस अधिकार की बात की गई है ? उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?-2
(घ) अर्थ लिखिए – संग्राम , सशस्त्र , योजना , घटा । -2

प्रश्न-3 **कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए ।**
नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ।
इहाँ हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेहीं ।
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ।
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ।
पुलकित तन मुख आव न बचना । देखत रुचिर वेष कै रचना ।
कविता – राम-सुग्रीव-मैत्री , कवि – तुलसी दास

(क) श्री राम ने अपना परिचय विप्र को किस प्रकार दिया ? -3
(ख) विप्र रूप में कौन और किस उद्देश्य से आया था ? -3
(ग) उमा कौन हैं ? उनसे कौन और किस सुख की बात कर रहा था ? -2
(घ) अर्थ लिखिए – जाए , निसिचर , निज , पुलकित । -2

प्रश्न-4 तीन गज की दूरी पर दीख पड़ा एक लड़का सिर के बड़े-बड़े बाल को खुजलाता हुआ चला आ रहा था ।

पाठ – अपना-अपना भाग्य , लेखक – जैनेन्द्र कुमार

(क) उस लड़के की वेश - भूषा का वर्णन करते हुए बताइए कि वह वहाँ क्यों आया था ? -2

(ख) वक्ता उस लड़के की क्या मदद करना वाहता था और कैसे ? -2

(ग) वक्ता उस लड़के की मदद क्यों नहीं कर सका तथा उसका क्या परिणाम हुआ ? -3

(घ) यह किस स्थान की बात है ? वहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन कीजिए । -3

प्रश्न-5 संबन्धियों ने उसके पति को वहाँ न छोड़ा , क्योंकि उन्हें मरकर जीवित हो जाने वाली मायावनी बहू की सच्चाई पर विश्वास नहीं ।

पाठ- लछमा , लेखिका – महादेवी वर्मा

(क) यह मायावनी बहू कौन थी ? उसका पति और उसकी ससुराल के लोग कैसे थे ? -2

(ख) वह अपने पति को कहाँ रखना चाहती थी और उसके लिए क्या- क्या करना चाहती थी ? -2

(ग) यह मायावनी बहू मरकर कैसे जीवित हुई थी तथा अपने घर कैसे पहुँची ? -3

(घ) मायावनी बहू का परिचय देते हुए उसका चरित्र- चित्रण कीजिए । -3

प्रश्न-6 अब की दशहरे की छुट्टियों में मैने निश्चय किया कि घर न जाऊँगा ।

पाठ- नशा , लेखक- मुंशी प्रेमचंद

(क)वक्ता ने दशहरे की छुट्टियों में घर न जाने का निश्चय क्यों किया ? -2

(ख) वक्ता ने दशहरे की छुट्टियाँ कहाँ जाकर और कैसे बिताईं ? -2

(ग) वहाँ जाने पर वक्ता के व्यवहार में क्या परिवर्तन आ गया और क्यों ? -3

(घ) कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए । -3

प्रश्न-7 नर और वानर का साथ कैसे सम्भव है ?
पाठ – राजरानी सीता , लेखक –डॉ रामकुमार वर्मा

(क) वक्ता कौन है ? वह इस समय कहाँ और किस परिस्थिति में है ? -2
(ख) श्रोता ने अपना परिचय किस प्रकार दिया ? तथा उसने वक्ता का विश्वास कैसे हासिल किया ? -2
(ग) यहाँ नर और वानर शब्द किनके लिए प्रयोग किए गए हैं ? दोनों का साथ कब और कैसे संभव हुआ ? -3
(घ) श्रोता का परिचय देते हुए उसका चरित्र – चित्रण कीजिए । -3

प्रश्न-8 चौदह साल के लड़के की इतनी हिम्मत पर किया भी क्या जा सकता है ?
माँ – बाप मुँह सिलकर तो रह नहीं सकते ।
पाठ – भटकन , लेखिका – शैल रस्तोगी

(क) चौदह साल के किस लड़के ने कौन सी हरकत की थी और क्यों ? -2
(ख) आज कल के विद्यार्थियों को अपने माँ – बाप से क्या शिकायत रहती है ? -2
(ग) वक्ता कौन है ? वह सुबह- सुबह कहाँ जा रहा था और क्यों ? -3
(घ) वक्ता और श्रोता का पुत्र कौन था ? उसके मन में कौन सी गलत फेहमी बैठ गई थी और वह कैसे दूर हुई ? -3

प्रश्न-9 वह तो बात भी नहीं सुनता , जाने बच्चे की तबीयत बहुत खराब है ।
पाठ – लक्ष्मी का स्वागत , लेखक- उपेन्द्रनाथ अश्क

(क) कौन किसकी , कौन सी बात नहीं सुनना चाहता था ? और क्यों ? -2
(ख) बच्चा कौन था ? उसकी तबीयत को क्या हुआ था तथा उसकी दशा कैसी थी ? -2
(ग) श्रोता कौन है ? वह इस बच्चे की तबीयत के बारे में क्या कहता है तथा क्या निर्णय लेता है ? -3
(घ) वक्ता का परिचय देते हुए उसका चरित्र- चित्रण कीजिए । -3